चोलों के अन्तर्गत प्रशासन — (ग्राम प्रशासन)

चोलों की शासन व्यवस्था में स्थानीय शासन का प्रमुख स्थान था। उसकी शासन व्यवस्था वर्तमान पंचायती राजव्यवस्था के समकक्ष थी। जो कि लोकतांत्रिक आधारों पर स्थापित की गयी थी।

उत्तरमेरू से परांतक कालीन 919 से 929 ई० के लेखों के आधार पर ग्राम सभा की कार्यकारिणी समितियों की कार्य प्रणाली का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।

प्रत्येक ग्राम में अपनी सभा होती थी जो केन्द्रीय नियंत्रण से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से ग्राम शासन का संचालन करती थी।

ग्राम में दो प्रकार की संस्थाएँ थीं —

(i) उर — सामान्य मनुष्यों की संस्था थी, सभी ग्रामवासी सम्मिलित होते थे। उर की कार्य समिति को 'गणम' कहा जाता था। कहीं-कहीं एक ही ग्राम में दो 'उर' संगठन काम करते थे।

(2) सभा या महासभा — यह अग्रहार ग्रामों में होती थी। ऐसे ग्रामों को ब्रह्मदेय या मंगलम भी कहा जाता था। इन ग्रामों में मुख्यतः विद्वान ब्राह्मण निवास करते थे। कांची तथा मद्रास क्षेत्रों में ऐसी कई सभाएं थीं। सभा मुख्यतः समितियों के माध्यम से काम करती थी। इसे वारियम कहा गया है। तमिल में इस शब्द का अर्थ आय है।

वारियम को मंदिर का प्रबंध करने, देवग्राम का प्रामाणिक विवरण देने एवं उसकी सीमा लिखने का कार्य दिया गया था। वारियम के सदस्यों को कोई पुरस्कार नहीं दिया जाता था।

Scanned with CamScanner

कभी कभी एक ही ग्राम में उर तथा सभायें दोनों ही संस्थाएँ कार्य करती थी। जिन स्थानों में ब्रह्मदेय पहले से बस्ती थी बाद में दान दे दी गयी वहाँ दोनों उर, सभा कार्य करती थी।

ग्राम सभा की बैठकें प्रायः मंदिरों एवं मंडपों में होती थीं।

समुदाय एवं निगम — ग्राम सभा के अतिरिक्त गाँव में कई समुदाय एवं निगम होते थे। ये सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक प्रकृति के थे। इसका अधिकार किसी कार्य विशेष तक ही सीमित होता था। समुदाय पर ग्राम सभा का ही नियंत्रण होता था। शिव पुजारियों को शिव ब्राह्मण तथा वैष्णव पुजारियों को 'वैखानस' कहा जाता था।

चोल स्थानीय प्रशासन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण था ग्रामों को पर्याप्त प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान करना। केन्द्रीय शासन अनावश्यक इनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करती थी।

नीलकंठ शास्त्री — एक योग्य नौकरशाही तथा सक्रिय स्थानीय संस्थाओं के बीच जो विविध प्रकार से नागरिकता की भावना का पोषण करती थी, शासन निपुणता तथा शुद्धता का एक उच्च स्तर प्राप्त कर लिया गया था जो किसी हिन्दू राज्य द्वारा प्राप्त सर्वोच्च स्तर पर था।

Scanned with CamScanner